INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 15 | ISSUE - 3 | APRIL – 2025

राष्ट्रीय चेतना के संवहन में भारतेन्दु का पत्रकारीय योगदान

डॉ. आकाश यादव
(पी.एच.डी, पत्रकारिका एवं जनसंचार)
सलाहकार (मानक प्रचार), भारतीय मानक ब्यूरो
उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्रालय, भारत सरकार.

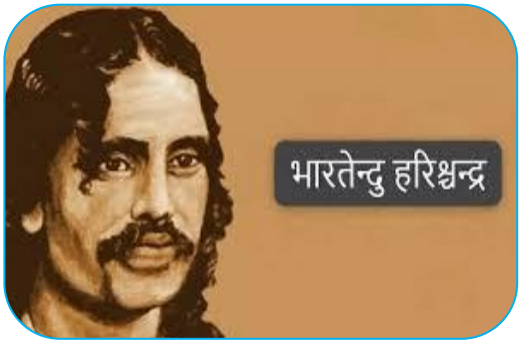

हर युग का साहित्य, उसकी पत्रकारीय चेतना अपने समय की राजनीतिक, सामाजिक व धार्मिक विचारधाराओं से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकती। यही वजह है कि हमें किसी युग या काल के साहित्य के माध्यम से उसके समाज, तत्कालीन राजनीति और धार्मिक मान्यताओं और स्थितियों के बारे में जानने को मिलता है। पत्रकारिता का साहित्य से गहरा जुड़ाव है। बात यदि भारतीय परिप्रेक्ष्य की करें तो पाते हैं कि प्रारंभिक दौर के पत्रकारों में ज्यादातर ऐसे लोग थे, जो एक अच्छे साहित्कार भी थे। उन्हीं में एक प्रमुख पत्रकार और साहित्यकार के तौर पर भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का पत्रकारीय योगदान भी स्मरणीय है। प्रस्तुत शोध अध्ययन के माध्यम से भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के पत्रकारीय योगदान के संबंध में गहराई से पड़ताल करने की कोशिश की गई है।

प्रमुख शब्द : पत्रकारिता, पूर्वांचल, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, राष्ट्रीय चेतना ।

भूमिका

हर युग का साहित्य, उसकी पत्रकारीय चेतना अपने समय की राजनीतिक, सामाजिक व धार्मिक विचारधाराओं से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकती। यही वजह है कि हमें किसी युग या काल के साहित्य के माध्यम से उसके समाज, तत्कालीन राजनीति और धार्मिक मान्यताओं और स्थितियों के बारे में जानने को मिलता है। पत्रकारिता का साहित्य से गहरा जुड़ाव है। बात यदि भारतीय परिप्रेक्ष्य की करें तो पाते हैं कि प्रारंभिक दौर के पत्रकारों में ज्यादातर ऐसे लोग थे, जो एक अच्छे साहित्कार भी थे। उन्हीं में एक प्रमुख पत्रकार और साहित्यकार के तौर पर भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का पत्रकारीय योगदान भी स्मरणीय है। प्रस्तुत शोध अध्ययन के माध्यम से भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के पत्रकारीय योगदान के संबंध में गहराई से पड़ताल करने की कोशिश की गई है।

प्रस्तावना

भारतेंदु हरिश्चंद्र का जन्म 9 सितंबर, 1850 ई. को काशी के एक धनाढ्य परिवार में हुआ था। करीब पैंतीस वर्ष की अवस्था में उनकी मृत्यु हुई। अपनी इस अल्पकालीन जीवन में ही उन्होंने वृहद् मात्रा में साहित्यिक कृतियों की रचना की और साथ ही कई पत्र व पत्रिकाओं का संपादन भी किया। मात्र ग्यारह वर्ष की अवस्था उन्होंने कविताएँ लिखनी शुरू कर दीं। सत्रह वर्ष के होने तक वे 'कविवचन सुधा' नामक एक समाचार पत्र का संपादन करने लगे थे। तीस वर्ष की अवस्था में 'भारतेंदु' की उपाधि से विभूषित किया गया।

अपने समकालीन समाज के सामने बाबू हरिश्चंद्र ने साहित्य की विभिन्न विधाओं, जैसे- कविता, नाटक, निबंध, जीवनी, आलोचना, आदि के माध्यम से एक समुचित समन्वय पेश करने का काम किया। उनके साहित्य और उनकी पत्रकारीय चेतना से लोग प्रभावित थे। उस दौर के आम पाठकों और दर्शकों के साथ-साथ साहित्य और पत्रकारिता जगत् से जुड़े लोग भी उनका अनुकरण कर रहे थे। उनके विचारों से सहमत थे। इस प्रकार वे भारतेंदु के विचारों के संप्रेषण का भी काम कर रहे थे। प्रताप नारायण मिश्र, बालकृष्ण भट्ट, बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन', लाला श्रीनिवास दास, ठाकुर खड्गमोहन सिंह, रामकृष्ण वर्मा, राधाकृष्ण दास, आदि की रचनाएँ भारतेंदु की रचनाओं से प्रभावित हुई हैं। इस प्रकार बाबू हरिश्चंद्र ने एक नई परंपरा की शुरूआत की जो आज भी कुछ अंशों एवं कुछ परिवर्तित रूप में देखने को मिलती है।

शोध का उद्देश्य : प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित हैं-

1. स्वतंत्रता आंदोलन में पत्रकारिता के अवदान को समझना।
2. पूर्वांचल की पत्रकारिता के बारे में विस्तृत जानकारी हासिल करना।
3. राष्ट्रीय चेतना के संवहन में भारतेन्दु के योगदान को जानना।

शोध प्रश्न : जिस प्रकार की बहस और मुद्दे वर्तमान पत्रकारिता में देखने-सुनने को मिल रहे हैं, ऐसे मुद्दों पर भारतेन्दु आज से करीब डेढ़ सौ साल पहले ही कलम चलाकर अपने आदर्श समाज की कल्पना को साकार करने की दिशा में उन्मुख दिखाई देते हैं। ऐसी स्थिति में भारतेन्दु किस प्रकार से अपनी पत्रकारीय योगदान के जरिये राष्ट्रीय चेनता को जगाने का काम कर रहे थे, यही प्रस्तुत अध्ययन का शोध प्रश्न है। इस शोध कार्य के माध्यम से इसी समस्या पर विचार किया गया है।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए शोध प्रविधि के रूप में वैयक्तिक अध्ययन का सहारा लिया गया है। इसके तहत भारतेन्दु के द्वारा प्रकाशित व संपादित पत्र-पत्रिकाओं के विषयवस्तु पर गहराई से विचार कर निष्कर्ष निकालने की चेष्टा की गई है। इसके साथ ही भारतेन्दु के साहित्यिक चेतना की भी पड़ताल की गई है।

शोध कार्य का महत्त्व

इस शोध कार्य के माध्यम से भारतेन्दु युगीन पत्रकारिता को जानने के साथ-साथ पूर्वांचल की पत्रकारिता के संबंध में भी विशेष रूप से जानकारी हासिल हो पाएगी। भारतेन्दु के पत्रकारीय योगदान के साथ ही साहित्यिक अवदान के बारे में भी जानकारी प्राप्त करना ही प्रस्तुत शोध कार्य का महत्त्व है।

शोध की सीमाएँ

भारतेन्दु युगीन पत्र-पत्रिकाओं का भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में विशेष भूमिका देखने को मिलती है। इस दौरान भारतेन्दु के साथ ही कई अन्य पत्रों का भी प्रकाशन निरंतर जारी था। लेकिन किसी भी युग या काल के संपूर्ण प्रवृत्ति के बारे में अध्ययन करना आसान प्रतीत नहीं होता है। ऐसे में प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से भारतेन्दु के पत्रकारीय योगदान का ही अध्ययन किया गया है। इसी को प्रस्तुत शोध पत्र की सीमांकन के रूप में शामिल कर अध्ययन किया गया है।

साहित्य पुनरावलोकन

रामविलास शर्मा (1999) लब्धप्रतिष्ठ प्रगतिशील आलोचक डॉ. रामविलास शर्मा ने इस पुस्तक में आधुनिक हिन्दी साहित्य के जनक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के जीवन और साहित्य-सम्बन्धी जीवंत तत्त्वों को ऐसे रूप में प्रस्तुत किया है कि आज की अनेक समस्याओं का भी समाधान मिल सके। भारतेन्दु-युगीन हिन्दी नवजागरण की समस्याओं पर विस्तार से विचार करते हुए इस पुस्तक में यह प्रतिपादित किया गया है कि भारतेन्दु हिन्दी की जातीय परम्परा के संस्थापक हैं और मुख्यतः उनकी बताई हुई दिशा में चलकर ही हमारा साहित्य उन्नति कर सकेगा। पुरानी पत्र-पत्रिकाओं एवं दुर्लभ पुस्तकों में दबे पड़े अनेक महत्त्वपूर्ण तथ्यों को पहली बार प्रकाश में लाकर डॉ. शर्मा ने भारतेन्दु का सर्वथा मौलिक चित्र पुनर्निर्मित किया है, जो बहुतों के लिए चौंकाने वाला सिद्ध हो चुका है। पुस्तक के अध्यायों में भारतेन्दु के नाटकों पर विस्तार से विचार करने के साथ, उनकी कविता, उपन्यास, आलोचना, निबंधकला एवं पत्रकारिता का भी आलोचनात्मक परिचय दिया गया है। इस संस्करण के लिए विशेष रूप से लिखित 'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और हिन्दी नवजागरण की समस्याएँ' शीर्षक एक नए अध्याय ने पुस्तक को और भी संग्रहणीय बना दिया है। वास्तव में भारतेन्दु साहित्य सम्बन्धी सभी पक्षों की प्रामाणिक जानकारी के लिए यह अकेली पुस्तक पर्याप्त है। इसी वजह से प्रस्तुत पुस्तक को शोध अध्ययन के लिए चुना गया है।

शर्मा (2006) भारतेंदु युग हिंदी साहित्य का सबसे जीवंत युग रहा है। सामाजिक-सांस्कृतिक-राजनीतिक-आर्थिक हर मुद्दे पर तत्कालीन रचनाकारों ने ध्यान दिया और अपना अभिमत व्यक्त किया, जिसमें उनकी राष्ट्रीय और जनवादी दृष्टि का उन्मेष है। वे साहित्यकार अपने देश की मिट्टी से, अपनी जनता से, उस जनता की आशा-आकांक्षाओं से जुड़े हुए थे, जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण उनकी रचनाएँ हैं, लेकिन उनकी, उनके युग की इस भूमिका को सही परिप्रेक्ष्य में देखने-समझने का प्रयास पहली बार डॉ. रामविलास शर्मा ने ही किया। वे ही हिंदी के पहले आलोचक हैं, जिन्होंने भारतेंदु-युग में रचे गए साहित्य के जनवादी स्वर को पहचाना और उसका संतुलित वैज्ञानिक मूल्यांकन किया। प्रस्तुत पुस्तक इसीलिए ऐतिहासिक महत्त्व की है कि उसमें भारतेंदु-युग कि सांस्कृतिक विरासत को, उसके जनवादी रूप को पहली बार रेखांकित किया गया है, लेकिन पुस्तक में जैसे एक ओर उस युग में रचे गए साहित्य की मूल प्रेरणाओं और प्रवृत्तियों का विवेचन है, वैसे ही दूसरी ओर प्रायः तीन शताब्दियों के भाषा-सम्बन्धी विकास की रूपरेखा भी प्रस्तुत है, जो डॉ. शर्मा के भाषा-सम्बन्धी गहन अध्ययन का परिणाम है। भारतेंदु युग हिंदी साहित्य का सबसे जीवंत युग रहा है। सामाजिक-सांस्कृतिक-राजनीतिक-आर्थिक हर मुद्दे पर तत्कालीन रचनाकारों ने ध्यान

दिया और अपना अभिमत व्यक्त किया, जिसमें उनकी राष्ट्रीय और जनवादी दृष्टि का उन्मेष है। प्रस्तुत पुस्तक में समाहित इन्हीं जानकारियों व विश्लेषण की वजह से इसका चयन साहित्य पुनरावलोकन के लिए किया गया है।

मीणा (2022) जनता के बीच विभिन्न माध्यमों से किये जाने वाले सम्प्रेषण का व्यावहारिक अनुप्रयोग प्रयोजनमूलक मीडिया है। प्रयोजनमूलक मीडिया का वर्तमान स्वरूप परिपक्व समाज की मनोदशा, विचार, संस्कृति और आम जीवन दशाओं को नियंत्रित व निदेशित कर रहा है। इसका प्रवाह अति व्यापक एवं असीमित है। प्रयोजनमूलक मीडिया माध्यमों द्वारा समाज में प्रत्येक व्यक्तिफ को अधिक से अधिक अभिव्यक्ति का अवसर प्राप्त हो रहा है। स्वतंत्र मीडिया लोकतंत्र की आधरशिला है अर्थात जिस देश में मीडिया के माध्यम स्वतंत्र और प्रयोजनमूलक नहीं है वहाँ एक स्वस्थ लोकतंत्र का निर्माण होना संभव नहीं है। मीडिया माध्यमों का जाल इतना व्यापक है कि इसके बिना एक सभ्य समाज की कल्पना की ही नहीं जा सकती। हालांकि मीडिया माध्यमों में हाल ही कुछ वर्षों में एक क्रांति का उदय हुआ है जिसे हम मीडिया-क्रांति कहते हैं। जनमाध्यमों में क्रांति के साथ-साथ सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी क्रांति आयी है जिसने मार्सल मैक्लुहान के वत्तव्य को पूर्णतः सत्य कर दिया कि संपूर्ण दुनिया एक वैश्विक गाँव में तब्दील हो जाएगी। मनुष्य के बोलने का अंदाज बदल जाएगा और क्रिया-कलाप भी। ऐसा ही हुआ है, आज युवा रेडियों सुन रहा है, टेलीविजन देख रहा है, मोबाइल से बात कर रहा है और अंगुलियों से कंम्प्यूटर चला रहा है। कहने का मतलब यह है कि युवा एक साथ कई तकनीकों से संप्रेषण-प्रक्रिया को अंजाम दे रहा है। प्रयोजनमूलक मीडिया संप्रेषण का विस्तृत स्वरूप धरण कर चूका है। जनसंचार माध्यमों का युवा वर्ग पर पड़ने वाले प्रभावों के संदर्भ में बाते करें तो हर एक विषय की तरह इसके भी दो रूप दिखाई पड़ते हैं। प्रस्तुत पुस्तक में निहित इन्हीं संदर्भा की वजह से इसका चयन साहित्य अध्ययन के लिए किया गया है।

भारतेन्दु के पत्रकारीय योगदान का विश्लेषण

भारतेंदु समाचार पत्र व पत्रिकाओं को समाज में नई चेतना फैलाने का एक सशक्त माध्यम मानते थे। अपनी इसी भावना के अनुरूप उन्होंने कई पत्र-पत्रिकाओं का संपादन किया और समाज में ज्ञान का प्रसार किया। कुरीतियों को खत्म करने व उनको बढ़ावा देने वाली स्थितियों और कारकों के प्रति लोगों में जागरूकता का प्रचार-प्रसार किया। इसके लिए उन्होंने संचार के एक सशक्त माध्यम नाटक के साथ-साथ एक अन्य कारगर विधा यानी पत्रकारिता का भी दामन थामा था। इन दोनों विधाओं ने उन्हें अपने विचारों के प्रसार में विशेष योगदान दिया। उनके जन्म के समय हिंदी पत्रकारिता करीब पच्चीस वर्ष पुरानी विधा के रूप में विद्यमान थी। इसलिए उनके समक्ष हिंदी पत्रकारिता की शुरूआत और उसे स्थापित करने जैसी कोई चुनौती नहीं थी। भारतेंदु युगीन पत्रकारिता की प्रेरणा भूमि कलकत्ता रही है। 30 मई, 1826 ई. को कलकत्ता से हिंदी पत्रकारिता की शुरूआत 'उदन्त मार्तण्ड' के रूप में हो चुकी थी। हालांकि यह पत्र हिंदी भाषी क्षेत्र से नहीं निकलता था, पर इसे निकालने वाले संपादक पंडित युगल किशोर शुक्ल थे, जो हिंदी भाषी क्षेत्र के ही थे। भारतेंदु के समय तक लगभग दो दर्जन हिंदी पत्र निकल चुके थे। स्वयं काशी से 'बनारस अखबार' और 'सुधाकर' प्रकाशित हुए थे। सन् 1867 ई. में प्रकाशित होने वाला भारतेंदु का 'कविवचन सुधा' काशी से प्रकाशित होने वाला तीसरा पत्र था।

भारतेन्दु जी एक युगद्रष्टा पत्रकार थे। उनके पत्रकारीय चिंतन में उन स्थितियों के बारे में भी उल्लेख मिलता है, जिसके संदर्भ में वर्तमान में भी कार्य हो रहे हैं। सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक व धार्मिक आदि से लेकर यात्रा, ज्ञान-विज्ञान, स्वास्थ्य जैसे विषयों के बारे में भी भारतेंदु जी का उस दौर का चिंतन उनकी दूर दृष्टि को ही बाताता है। समाज में स्त्री-पुरुष समानता की

बात बाबू भारतेंदु जी ने अपने पत्र 'कविवचन सुधा' में की दी थी। इस पत्र के एक नियमित कॉलम के जरिये वे लोगों को नकली और भ्रामक चीजों के चंगुल में न फँसने की हिदायत देते थे। चाहे नकली अशर्फी के बारे में बताना हो या हैजा जैसे रोग के रोकथाम का तरीका, हर जगह उनकी कलम घूमती नजर आती है। भारतेन्दु जी का मानना था कि महिलाओं को शिक्षित होना चाहिए। यदि वे पढ़ाई-लिखाई करें तो समाज विकास भी तेजी के साथ होगा और अंधविश्वासों, कुप्रथाओं और असमानताओं को दूर किया जा सकेगा। इन्हीं भावनाओं को लेकर भारतेन्दु जी ने स्त्रियों के लिए अलग से एक शिक्षोपयोगी मासिक पत्रिका 'बाला बोधिनी' का प्रकाशन किया।

निष्कर्ष एवं सुझाव

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र बड़े साहित्यकार के साथ-साथ एक अच्छे पत्रकार भी थे। हिंदी पत्रकारिता के क्षेत्र में उनका विशेष योगदान है। भारतेन्दु जी के समय का भारतीय हिंदी मानस अलग-अलग बोलियों में बंटा हुआ था। इस वजह से तात्कालीन समाज अलग-अलग राग अलापता नजर आता था। इस मत विभेद वाली स्थिति से चिंतित होकर भारतेन्दु जी ने अपने पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से हिंदी के बोलियों में बंटे हुए विभिन्न रूपों को एकता के सूत्र में पिरोने का काम किया। इस तरह से हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में गढ़ने का ठोस पहल भारतेन्दु युग की ही देन मानी जा सकती है।

जब हम किसी युग विशेष को किसी व्यक्ति विशेष के नाम से संबोधित करते हैं तो इसका तात्पर्य यह नहीं होता कि उस युग में मात्र उस एक व्यक्ति ने ही काम किया हो। बल्कि किसी भी युग में अन्य कई समकालीन व्यक्तियों का भी अपना अलग योगदान होता है। जिस व्यक्ति विशेष के नाम से किसी युग के नाम को जोड़ा जाता है, उसके संदर्भ में प्रायः यह देखा जाता है कि उस युग की मुख्य चेतना को उसने अपने समय की मुख्यताओं के साथ ग्रहण किया है। यदि इस दृष्टिकोण से देखा जाए तो हिंदी साहित्य के एक काल विशेष को भारतेंदु युग के नाम से जानना उचित प्रतीत होता है।

संदर्भ

1. **मोहन, नरेन्द्र. (1999),** भारतेंदु हरिश्चंद्र, प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली।
2. **शर्मा, आर. (1999),** भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और हिंदी नवजागरण की समस्याएँ, राजकमल प्रकाशन : नई दिल्ली।
3. **श्रीधर, विजय. (2010),** भारतीय पत्रकारिता कोश, वाणी प्रकाशन : नई दिल्ली ।
4. **बिसारिया एवं यादव, (2021),** हिंदी काव्य, प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली।
5. **शर्मा, हेमंत (सं.) (2000),** भारतेन्दु समग्र, हिंदी प्रकारक पब्लिकेशन : वाराणसी ।
6. **नाथ एवं जोशी (सं.) (1986),** भारतेन्दु एवं भारतीय नवजागरण, आनेवाला कल प्रकाशन : कोलकाता।

डॉ. आकाश यादव
(पी.एच.डी, पत्रकारिका एवं जनसंचार)
सलाहकार (मानक प्रचार), भारतीय मानक ब्यूरो उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्रालय, भारत सरकार.